IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की आवासीय समस्याओं का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन

रेशमा खानम

शोधार्थी, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

डॉ. मीना सिरोला

एसोसिएट प्रोफेसर, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

Reshmakhan151218@gmail.com and meenasirola@banasthali.in

सार–सही मार्गदर्शन के अभाव में विद्यार्थी अपने आप को भटकाव की स्थिति में पाता है और सफलता का सामना न कर पाने से हिनता व कुण्ठाग्रस्त होने के कारण गलत रास्तों की ओर अग्रसित हो जाता है इस भटकाव का प्रमुख कारण बढ़ती जनसंख्या, रोजगार के घटते अवसर, आर्थिक व सामाजिक परिस्थितियॉ तथा विभिन्न व्यवसाय के प्रति अनुकरणीय है। स्वयं की योग्यताओं व क्षमताओं की सही पहचान किये बिना केवल आकर्षक वेतन व प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश हेतु सही विषय का चयन नही कर पाते हैं परिणामतः उनका भविष्य अनिश्चित एवं निराशा के भंवर जाल में उलझकर रह जाता है। युवा वर्ग की कार्य क्षमता उसका उत्साह कल्पनायें और उसकी अभिलाषायें उच्च स्तर की होती है इनको सही दिशा प्रदान करने के लिए विद्यालय स्तर से ही शैक्षिक निष्पत्ति को ध्यान दिया जाना आवश्यक है। चूँकि विद्यालय का प्रदान प्राचार्य होता है अतः उसे हम सेवाओं व कार्यक्रमों के प्रति सजग रहना चाहिये। किशोरावस्था में विद्यार्थी की भावात्मक विकास के विभिन्न आयामों को पहचान कर इससे उत्पन्न होने वाली भावनाओं, संवेगों तथा सह संबंधित व्यवहारगत अभिव्यक्ति को उचित दिशा प्रदान की जा सकती है। वर्तमान समय में विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र शक्ति, दिशा ग्रस्ति तनाव ग्रस्त लक्ष्य रहित, गतिविधियों में लिप्त है। इससे बचने का एक मात्र उपाय विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पति है जिससे उनका स्तर ज्ञात हो जाता है।

शब्दावली: कस्तूरबा गाँधी योजना, मानसिक स्वास्थय

प्रस्तावना

किसी देश की प्रगति एवं संस्कृति की सम्पन्नता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि उस देश के लोगों की शिक्षा का स्तर क्या है। साक्षरता और शिक्षा की उत्तरोत्तर वृद्धि के कारण ही कोई देश विकास की चरमसीमा पर पहुँचता है। इसलिए मानव विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में आदिकाल से ही शिक्षा का विविध भाँति से प्रचार होता रहा है।

भारत सरकार ने सभी को शिक्षा प्रदान करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है। बावजूद इसके एशिया महाद्वीप में भारत में महिला साक्षरता दर सबसे कम है। 2001 की जनगणना (स्त्रोत–भारत 2006, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार) के अनुसार देश की 49.46 करोड़ की महिला आबादी में मात्र 53.67 प्रतिशत महिलाएँ ही साक्षर थी। इसका मतलब यह है कि भारत में आज लगभग 22.91 करोड़ महिलाएँ निरक्षर हैं।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

इस निम्न स्तरीय साक्षरता का नकारात्मक असर सिर्फ महिलाओं के जीवन स्तर पर ही नहीं अपितु उनके परिवार एवं देश के आर्थिक विकास पर भी पड़ा है। अध्ययन से यह पता चलता है कि निरक्षर महिलाओं में सामान्यतया उच्च मातृत्व मृत्यु दर, निम्न पोषाहार स्तर, न्यून आय अर्जन क्षमता और परिवार में उन्हें बहुत ही कम स्वायतता प्राप्त होती है। महिलाओं में निरक्षरता का नकारात्मक प्रभाव उसके बच्चों के स्वास्थ्य एवं रहन सहन पर भी पड़ता है। उदाहरण के लिए, हाल में किये गये एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि शिशु मृत्य दर और माताओं की शैक्षणिक स्तर में गहरा संबंध है। इसके अतिरिक्त, शिक्षित जनसंख्या की कमी देश के आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न कर रही है।

इसी प्रकार शिक्षा में मनुष्य की शारीरिक अभिवृद्धि और उसके शारीरिक, मानसिक, भाषायी, संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास का अध्ययन किया जाता है। मनुष्य की शिक्षा एवं विकास में उसके मानसिक स्वास्थय एवं उसके समायोजन की अहम् भूमिका होती है परन्तु आज हमारे समाज में संघर्ष, अनाचार एवं अत्याचार हो रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने जीवन को किस प्रकार सुखी एवं संतुष्ट बना सकते हैं जिससे हमारा मानसिक स्वास्थय स्वस्थ रहे क्योंकि स्वस्थ मानसिक विकास के पदों पर चलकर मनुष्य अपनी शैक्षिक उपलब्धियों के उन उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता है जिसके लिये वो इतने अथक प्रयास कर रहा है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

मानव अपने विकास क्रम के प्रत्येक स्तर में वातावरण के साथ समायोजन करता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि उसके व्यक्तित्व का विकास सन्तुलित रूप से हो सके। प्रत्येक व्यक्ति यह प्रयास करता है कि वह अपने जीवन की विषमताओं एवं क्लिष्टताओं को दूर कर गुणवत्तापूर्ण जीवन यापन करें। इस प्रक्रिया में उसे सफलतायें और असफलतायें दोनों ही प्राप्त होती है। व्यक्ति समायोजन के द्वारा सन्तुलित व्यवहार करता है। यह सन्तुलित व्यवहार व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं, भावनाओं, इच्छाओं, महत्वकांक्षाओं और आदर्शों में सन्तुलन करते हुये करता है बदलते सामाजिक परिवेश में औद्योगिकरण, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण का प्रभाव मानव जीवन की गुणवत्ता में पड़ रहा है जिसके परिणाम स्वरूप दबाव, असुरक्षा, तनाव, चिन्तायें व्यक्ति को अशान्त बना रही हैं। परिणामतः उसके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

सामंजस्य की समस्यायें प्रत्येक व्यक्ति में उसकी वैयक्तिक विभिन्नता के कारण अलग–अलग प्रकार की हो सकती हैं। बावजूद इसके व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में सामंजस्य की क्षमता विकसित करते रहता है। एक स्वस्थ्य समायोजित व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य की स्थितियाँ उसके व्यक्तित्व को भिन्न तरीके से प्रस्तुत करती हैं क्योंकि सुसमायोजन को अच्छे मानसिक स्वास्थ्य का प्रर्यायवाची मानते हैं। **गिलमर (1970)**. के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य वास्तव में सम्पूर्ण व्यक्तित्व का पूर्ण समरूपता के साथ कार्य करना है। **हैडफिल्ड (1950).** के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य एक तरह का समायोजी व्यवहार है जो व्यक्ति को जिंदगी के सभी प्रमुख क्षेत्रों सांवेगिक सामाजिक शैक्षिक आदि में सफलता पूर्वक समायोजन करने में मदद करता है। ऐसा माना जाता है कि मानसिक स्वास्थ्य का सम्बन्ध शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ समायोजन एवं मनोरोगों से भी होता है। इसी वजह से इस विषय पर अध्ययन करने की आवश्यकता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

सम्बन्धित साहित्य

- ❖ शर्मा लक्ष्मी (2016–17). "कस्तूरबा गाँधी में अध्ययनरत बालिकाओं की रूचि का अध्ययन"।
- ❖ एम. के. त्रिपाठी (2015–16) "कस्तूरबा गाँधी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शिक्षा मूल्यों की एकता हेतु प्रभावकारी माध्यम का अध्ययन"।
- ❖ यादव, हनुमान सहाय (2015) : "माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षकों के पारिवारिक व शैक्षिक उत्तरदायित्व का उनके मानसिक सन्तुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"।
- ❖ नारायण, दीपक (2014) : "स्नातक स्तर के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य व शिक्षण व्यवसाय के प्रति उतरदायित्व का अध्ययन"।
- ❖ त्रिपाठी, शशिकांत एवं श्रीवास्तव, रचना (2013–14) : "उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनत शिक्षकों में मानसिक सन्तुष्टि का अध्ययन।"

उद्देश्य–

1. कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना के बारे में जानना।
2. बालिकाओं के मानसिक स्वास्थय के बारे में जानना।

1. कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना बारे में जानना :– ये एक केंद्र सरकार द्वारा चलाई जाने वाली अत्यन्त महत्वपूर्ण योजना है। इस योजना के चलते देश की पिछड़े वर्ग और गांव में निवास करने वाली अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक समुदायों और गरीबी रेखा से नीचे की लड़कियों को मुफ्त में शिक्षा दी जायेगी। इस योजना के चलते सरकार कई तरह की मुफ्त में प्रावधान करेगी जैसे कि :

1. सभी बालिकाओं को आवास उपलब्ध करवाया जायेगा।
2. पुस्तकें तथा शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवायी जाएगी।
3. स्कूल यूनिफार्म, स्वेटर, जूते–मोजे आदि दिए जायेंगे।
4. दैनिक उपयोग वस्तुओं (साबुन, तेल, तोलिया, टूथ–पेस्ट, कंघा, चप्पल, सेनेटरी नेपकिन) इत्यादि दिए जायेंगे।
5. प्रतिमाह 100/– बालिकाओं के व्यक्तिगत बैंक खाते में जमा करवाया जायेगा ताकि उनकी कुछ जरूरतमंद चिजों को पूरा किया जा सके ।

कस्तूरबा गाँधी विद्यालय योजना के सम्मुख आने वाली समस्याएँ

1. वित्तीय समस्याएँ
2. बुनियादी ढाँचें की समस्याएँ
3. शिक्षकों और स्टॉफ की कमी
4. सामाजिक चुनौतियाँ
5. छात्राओं की उपस्थिति और ड्रॉपआउट
6. प्रशासनिक और क्रियान्वयन से जुड़ी समस्याएँ

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

2. बालिकाओं के मानसिक स्वास्थय के बारे में जानना :– मानसिक स्वास्थय का सरल शब्दों में अर्थ उस स्वास्थय से है जिसका सम्बन्ध मनस या मन से होता है। शारीरिक स्वास्थय जहाँ शरीर के स्वास्थय से अपना सम्बन्ध रखता है और इस रूप में अंग प्रत्ययों की उचित वृद्धि, विकास और उनके ठीक प्रकार से संचालन, देखभाल और स्वस्थय रहने की बात करता है। **कट्स एवं मोसले के अनुसार–** "मानसिक स्वास्थय वह योग्यता है जो हमें अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों में समायोजन करने में सहायक होती है।"

योजनाओं के अन्तर्गत आने वाली समस्याओं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थय पर प्रभाव

1. आत्मविश्वास की कमी
2. तनाव और चिन्ता
3. अवसाद और अकेलापन
4. सामाजिक दवाब ओर मानसिक आघात
5. शारीरिक और मानसिक थकान

निष्कर्ष

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के अध्ययन से प्राप्त होता है कि मानसिक स्वास्थय के लिये विद्यालय में परामर्शदाता की नियुक्ति की जानी चाहिए तथा बालिकाओं के मानसिक स्वास्थय एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिये विद्यालयों में जागरूकता से जुड़े कार्यक्रमों को आयोजित कराना चाहिये तथा उनकी उपलब्धियों को पहचानकर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। इसके अलावा समाज और परिवार में लड़कियों की शिक्षा और अधिकारों के महत्व पर जागरूकता अभियान को समाज तक पहुचाना चाहिए तथा लैंगिक भेदभाव और बाल विवाह के खिलाफ सख्त कदम उठाना चाहिए। वहीं विद्यालयों और छात्रावासों में बालिकाओं की सुरक्षा को सुनिश्चित करना तथा बालिकाओं को भावनात्मक और मानसिक समर्थन प्रदान करना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. गुप्ता महावीर प्रसाद, गुप्ता ममता : शैक्षिक निर्देशन व परामर्श, एच. पी भार्गव बुक हाउस, आगरा, द्वितीय संस्करण, 2009.
[2]. ऑबराय डॉ. एस. सी : शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श, लायल बुक डिपो, मेरठ.
[3]. टोंडीमल सच्चिदानंद, फाटक अरविंद : शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, चतुर्थ संस्करण, 2006.
[4]. नाटाणी, प्रकाश नारायण सामाजिक अनुसंधान व सर्वेक्षण, पॉइटर पब्लिशर्स, जयपुर, 2000.
[5]. Webster's New collegiate Dictionary, 1949.
[6]. Kerlinger F.N. : Foundation of Behaviour Research (HOTT).
[7]. Townsend J.C., Introduction Experimental Mehtods (MC grow Hill) 1953.
[8]. **www.guidance**.spps.org
[9]. www.careerdisha.org
[10]. www.britannica.com/.../topic/.../**guidance-counseling**